शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofek;k dk lokfekd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ९ : नई दिल्ली : ३-९ जून २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी समदड़ी का छहदिवसीय प्रवास सानंद संपन्न कर पारलू पधार गए हैं। पूज्यप्रवर यहां दो दिन प्रवास करेंगे। २ जून को यहां दीक्षा महोत्सव का समायोजन है। ६-२७ जून तक पूज्यप्रवर पचपदरा में प्रवास करेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार २९ जून को चतुर्मास हेतु जसोल पधार जाने की संभावना है।

ije J); vkpk;ioj ckykrjk e

exy Hkkouk lekjkg

„f ebA बालोतरा प्रवास का ३०वां व अन्तिम दिन। प्रवास व्यवस्था समिति के संरक्षक श्री पुखराज तलेसरा, मंत्री श्री शान्तिलाल'शान्त', सहमंत्री श्री महेन्द्र बैदमूथा, परामर्शक श्री चंपालाल गोलेच्छा, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री शान्तिलाल डागा, तेयुप अध्यक्ष श्री ललित जीरावला, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती विमला गोलेच्छा, श्री प्रकाश श्रीश्रीमाल, श्री पारस गोलेच्छा, श्री ओमप्रकाश बांठिया, श्री भंवर दाणी ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। श्री राजेश खींवसरा ने गीत प्रस्तुत किया। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री देवराज खींवसरा ने अपने भाषण में भवन निर्माण व प्रवास व्यवस्था समिति से जुड़े दानदाताओं व कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया और बालोतरा को पावस प्रवास प्रदान करने की भाव भरी प्रार्थना की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधुओं के लिए विहार करना, विचरण करना प्रशस्त है। बुढ़ापा, बीमारी एवं विशेष प्रयोजन के अतिरिक्त एक जगह कल्प से अधिक नहीं रहा जा सकता। मैं तो चाहता हूं कि मैं विचरण करता रहूं। एक स्थान पर न रहना पड़े। सिवांची-मालाणी क्षेत्र में आना हुआ। पहले से निर्धारित कार्यक्रमों को संपन्न कर सका। सिवांची-मालानी का सिरमौर क्षेत्र है बालोतरा। बाड़मेर जिले का यह प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्र है। बाड़मेर जिला है, पर वहां के लोग भी यहां रहते हैं। यहां एक मास में विभिन्न कार्यक्रम संपन्न हुए। इतना विशाल पंडाल भी भरा हुआ रहता। कल रात को भी अच्छी उपस्थिति थी। बालोतरा में हमने लंबा प्रवास किया।'

समय की महत्ता को रेखांकित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'समय का अंकन करें और उसका सदुपयोग करने का प्रयास करें। व्यक्ति अच्छे-बुरे कार्यों में अपने समय का नियोजन करता है। वह अच्छे कार्यों में समय नियोजन के प्रति सचेष्ट रहे। प्रिय की विदाई का क्षण सामान्यतया अप्रिय लगता है। जीवन में पैसा, पद व प्रतिष्ठा मिल जाए, पर साधु-संगति प्राप्त होना दुर्लभ होता है। संतों की संगति कल्याण का पथ प्रशस्त करती है।'

बालोतरावासियों द्वारा प्रस्तुत चतुर्मास की प्रार्थना के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'बालोतरावासियों की भावना अच्छी है। यहां का जैन समाज बड़ा है। अन्य समाज में भी अच्छी रुचि देखने को मिली। धार्मिक वातावरण प्रतीत हुआ। हम इस क्षेत्र के महत्त्व को स्वीकार करते हैं। यहां पूज्य गुरुदेव तुलसी ने चतुर्मास व मर्यादा महोत्सव किया। जसोल में चतुर्मास नहीं हुआ तो उसे दिया। जहां कभी हुआ नहीं और वह क्षेत्र अगर उपयुक्त और सक्षम है तो उसे प्राथमिकता मिलनी चाहिए। बालोतरा को अभी धैर्य रखना चाहिए। लंबी यात्रा घोषित है। कई क्षेत्रों के लिए पहले से घोषणाएं की जा चुकी हैं। अभी मैं नए सिरे से बालोतरा

के लिए कोई घोषणा करना नहीं चाहता। जब भी कोई ऐसा अवसर आएगा तो सोचा जा सकेगा। पूरे शहर में अच्छा धार्मिक वातावरण बना रहे।'

कार्यक्रम के पश्चात् आचार्यवर की सन्निधि में बालोतरा प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री देवराज खींवसरा ने पचपदरा प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री पुखराज मदानी व अन्य कार्यकर्ताओं को दायित्व हस्तान्तरण के रूप में जैन ध्वज सौंपा।

मध्याह्न में तेरापंथ भवन के हॉल में आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में भवन निर्माण व प्रवास व्यवस्था समिति से जुड़े दानदाताओं व कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। तेरापंथ युवक परिषद बालोतरा के पिछले तैंयालीस वर्षों से रहे अध्यक्ष व मंत्री को मोमेन्टो भेंट कर सम्मानित किया गया। रात्रि में भी मंगलभावना का अवशिष्ट कार्यक्रम चला, जिसमें अनेक भाई-बहनों ने गीत, कविता, वक्तव्य आदि के द्वारा पूज्यवर के प्रवास के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

किशोर मण्डल के त्रिदिवसीय अधिवेशन के तीसरे दिन प्रातः एक रैली निकाली गई, जिसमें पंचरंगी टोपी पहने किशोर उद्घोष करते हुए चल रहे थे। रैली के बाद तेयुप प्रभारी मुनि दिनेशकुमारजी ने किशोरों को संबोधित किया। आज एक प्रदर्शनी का भी उद्घाटन हुआ, जिसमें पर्यावरण चेतना के जागरण व नशामुक्ति के संदेश के साथ ऐतिहासिक डाक टिकटों व सिक्कों को भी प्रदर्शित किया गया। पूज्य आचार्यप्रवर प्रदर्शनी स्थल पर पधारे। अधिवेशन में बाईस किशोरों ने 'स्वस्थ एवं सुदृढ़ भारत' थीम पर अपनी बेबाक प्रस्तुतियां दीं।

त्रिदिवसीय अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर), राजस्थान पत्रिका के उपमहाप्रबंधक श्री प्रवीण नाहटा, अभातेयुप उपाध्यक्ष श्री बी.सी.भलावत, युवकरत्न श्री बजरंग जैन, श्री श्रेयांस कोठारी ने विविध विषयों पर किशोरों को प्रशिक्षण दिया। उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर ने अधिवेशन प्रायोजक पी.एन.ज्वेलर्स (कांकरोली-चेन्नई) के प्रति आभार व्यक्त किया। अधिवेशन में पूरे देश में फैले बहत्तर किशोर मण्डलों के ५०५ किशोरों ने भाग लिया।

clykrjk iokl % dN mYy[kuh; rF;

- **„„ viyA** बालोतरा में ऐतिहासिक प्रवेश की शृंखला में सूचीबद्ध हो गया। उस दिन जैसे जन-ज्वार उमड़ पड़ा। २२ मई को ही पूज्यप्रवर ने बालोतरा से शुभ प्रस्थान किया। इस तीसदिवसीय प्रवास में कई महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित हुए। अक्षय तृतीया के अवसर पर ४६७ पारणे होना अब तक का रेकॉर्ड है। अमृत महोत्सव का चतुर्थ चरण व उसके उपलक्ष्य में चला साप्ताहिक कार्यक्रम, पदाभिषेक दिवस, दीक्षा दिवस आदि कार्यक्रम आयोजित हुए, वहां राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर, किशोर मण्डल अधिवेशन जैसे देशव्यापी कार्यक्रम भी आयोजित हुए। जैन विद्या कार्यशाला एवं केरियर कौंसिलिंग जैसे अनेक स्थानीय स्तर के महनीय कार्यक्रम भी हुए।
- बाडमेर जिले का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र व लूनी नदी के तट पर स्थित बालोतरा में तेरापंथ समाज के लगभग ८०० घर एवं अन्य जैन समाज के लगभग एक हजार घर हैं। परमपूज्य आचार्यप्रवर के इंगितानुसार तेरापंथी घरों के साथ-साथ अन्य जैन व जैनेतर घरों में साधु-साध्वियां गोचरी हेतु पधारे। चार दिनों में लगभग दो हजार से अधिक घरों में साधु-साध्वियों का पदार्पण हो जाता। पूरे जैन समाज व अन्य वर्गों में अतीव उल्लास परिलक्षित हुआ।
- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने गृहस्पर्शना के संदर्भ में अपनी घोषित नीति की अनुसार शहर की विभिन्न कालोनियों में स्थित वृद्ध व अशक्त लोगों को दर्शन दिए। जिस गली में आचार्यवर का पदार्पण होता, वहां के लोगों में उमंग और उत्साह भर जाता।

- बालोतरा प्रवास में प्रातःकालीन प्रवचन का दृश्य अद्भुत रहता। पूरा पण्डाल (अमृत समवसरण) खचाखच भरा रहता। अनुमानतः पांच हजार भाई-बहनों की उपस्थिति प्रतिदिन रहती। प्रायः सोलह भावनाओं एवं अन्य समसामयिक प्रसंगों के अनुरूप आचार्यवर के उत्प्रेरक प्रवचन से सब लाभान्वित होते।
- बालोतरा प्रवास में प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत आगमाधारित मूल व्याख्यान के सिवाय अतिमुक्तक अणगार पर गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित आख्यान 'मैं तिरूं म्हांरी नाव तिरै' पर आचार्यवर का सरस प्रवचन हुआ।
- २-१३ मई (रविार के अतिरिक्त) तक मध्याह्न में बालोतरा के श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं की पारिवारिक सेवाओं का सुन्दर क्रम चला। इस दौरान पूज्य आचार्यवर की पावन प्रेरणा से लोगों ने विविध त्याग-प्रत्याख्यान किए और गुरुधारणा भी स्वीकार की। इस उपक्रम में मुनि जितेन्द्रकुमारजी का भी श्रम रहा।
- रात्रिकालीन कार्यक्रमों में २० मई को 'जीने की कला' विषयक आचार्यवर के प्रेरक उद्बोधन में जबर्दस्त उपस्थिति रही। कई कार्यक्रमों के अलावा वक्तव्य भी हुए। वक्तव्य देने वाले थे मुनि उदितकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर)। रात्रि में कई बार पूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि भी प्राप्त होती रही। कई बार संक्षिप्त, किन्तु प्रेरक उद्बोधन हुए।
- आचार्यवर सहित सभी संतों का प्रवास अग्रवाल कालोनी स्थित निर्मीयमाण नए तेरापंथ भवन में हुआ। लगभग अड़तीस हजार वर्गफीट भू-भाग में अभी तक ६९ हजार वर्गफीट निर्माण कार्य हुआ है और कुछ होना अभी अवशिष्ट है। लगभग अठारह हजार वर्गफीट बेसमेंट के साथ भूमि तल पर पिलररहित दस हजार वर्गफीट विशाल हॉल है। इनके अतिरिक्त कई छोटे हॉल व कमरे हैं। बताया गया कि इतना विशाल भवन मात्र दस माह की अवधि में निर्मित हुआ है। प्रवास व्यवस्था समिति के अंतर्गत भवन निर्माण कमेटी ने यह निर्माण कार्य संपन्न करवाया। इस कार्य के संयोजक श्री देवराज खींवसरा व उनकी टीम इस दौरान पूर्ण सक्रिय रही। बेसमेंट सहित इस भवन में चार तल हैं।
- आवास सूत्रों के अनुसार यात्रियों के आवास हेतु कुटीर भी निर्मित हुए। बाथरूम सहित पैंतीस कुटीर तुलसी नगर में थे, जबकि महाश्रमण नगर में पैंसठ एकल कुटीर थे। इसके अलावा अनेक धर्मशालाएं व समाज के अन्य भवन भी उपयोग में आए। भोजन व्यवस्था से संबद्ध कार्यकर्ताओं ने बताया कि वर्धमान स्कूल में निर्मित पन्द्रह हजार वर्गफीट पण्डाल में भोजनालय की व्यवस्था रही।

clykrjk l exy fogkj

„„ ebA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः नए तेरापंथ भवन से विहार किया। जन सैलाब उनका अनुगमन कर रहा था। हजारों लोग सड़क के दोनों ओर खड़े होकर पूज्यप्रवर का अभिवादन कर रहे थे। पूज्यप्रवर मार्गवर्ती संत राघवराम आश्रम में पधारे। वहां शिव मंदिर के पास आचार्यवर ने जनता को मंगलपाठ सुनाया। लगभग ग्यारह किमी. का विहार कर आचार्यवर जानियाना पधारे। वहां आपका प्रवास स्थानीय रावले में हुआ। ठाकुर भंवरसिंहजी ने पूज्यचरण का स्वागत किया। बालोतरा से जानियाना तक मार्ग में सेवार्थी भाई-बहन बड़ी संख्या में पदयात्रा कर रहे थे। गर्मी की प्रचण्डता उनके उत्साह को मंद नहीं कर सकी।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय परिसर में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में बालोतरा नगरपालिका के चेयरमैन श्री महेश बी. चौहान ने बालोतरा प्रवास के लिए पूज्यप्रवर का आभार व्यक्त किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रमोद भावना पर मंगल प्रवचन करते हुए कहा--'विकास करने के इच्छुक व्यक्ति में ईर्ष्या का भाव नहीं, सदैव प्रमोदभाव होना चाहिए। प्रमोद भावना से युक्त व्यक्ति दूसरों का हित चिंतन करता है, हितकर कार्य करता है। जो दूसरों का अनिष्ट चिंतन करता है, वह व्यक्ति अधम कोटि का होता है। जिसमें भौतिक आकांक्षा, पद प्राप्ति की आकांक्षा, नाम-यश की भावना रहती है, उसमें आध्यात्मिक चिंतन की कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति मध्यम कोटि का होता है। उत्तम व्यक्ति वे होते हैं, जिनमें साधना व ध्यान-ज्ञान में आगे बढ़ने की रुचि, राग-द्वेष कम करने की आकांक्षा, कषाय के मंदीकरण व आध्यात्मिक विकास की कामना व भावना रहती है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'यह जगत कामना का जगत है। यहां निष्काम वृत्ति वाले व्यक्ति बहुत कम मिलते हैं। किसी के सुखी होने पर प्रमोद भाव बढ़े, ईर्ष्या को न पनपने दें, ऐसी स्थिति में सामुदायिक जीवन सुखमय बनता है और साहचर्य सुचारु रूप से चलता है। कार्यकर्ताओं में परस्पर प्रमोदभाव रहे तो संस्थाओं का विकास संभव है। व्यवहार की भूमिका में प्रमोद भाव बहुत उपयोगी है। प्रोत्साहन से आगे बढ़ने में सहयोग मिलता है। बड़े अपने से छोटों को प्रोत्साहित करें, उन्हें अपेक्षित मार्गदर्शन दें और गलती का समुचित परिष्कार करें तो उन्हें सफलता मिल सकती है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। रात्रि में भी प्रवचन का कार्यक्रम चला।

dkukuk e f}fnol h; iokl

„… ebA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः जानियाना से नौ किमी. का विहार कर द्विदिवसीय प्रवास हेतु कानाना पधारे। पूज्यप्रवर के पदार्पण से कानाना का न केवल तेरापंथ समाज आह्लादित था, अपितु अन्य जैन और जैनेतर समाज में भी उल्लास का वातावरण था। सरपंच गणेशसिंह चौधरी आदि गणमान्य व्यक्तियों के साथ हजारों लोगों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यवर का यहां द्विदिवसीय प्रवास आंजना समाज भवन में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने गीत का संगान किया। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति कानाना के संयोजक श्री अमृतलाल कोठारी, श्री मोतीलाल बाफना और ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनलाल चोपड़ा ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित स्थानीय विधायक श्री मदन प्रजापत ने भी आचार्यवर के स्वागत में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। दीक्षार्थिनी मुमुक्षु परिमल (पारलू) ने अपने भावपूर्ण विचारों को अभिव्यक्ति दी। श्री देवराज चोरड़िया ने पूज्यप्रवर से सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने संकल्पों का उपहार श्रीचरणों में समर्पित किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्बोधन हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में पन्द्रहवीं कारुण्य भावना को विवेचित करते हुए कहा--'हम लोग अभी अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। इसका लक्ष्य है--अनुकंपा की चेतना का विकास। जन-जन में दया की चेतना जागे, लोग निर्दयता से दूर रहें। मेरा मानना है कि दयावान व्यक्ति काफी पापों से बच जाता है। दया का विकास होता है तो चेतना निर्मलता की ओर आगे बढ़ती है। कन्या भ्रूणहत्या जैसे घिनौने कृत्य का एक कारण करुणा की कमी है। करुणा का कुछ अभाव होता है तभी व्यक्ति बेईमानी में जाता है। उद्योग में भी दया के अभाव में क्रूरता हो सकती है। एक मालिक मजदूर से काम पूरा ले और वेतन देने में कंजूसी करे तो वह मालिक के द्वारा मजदूर का शोषण है। इसी प्रकार यदि मजदूर वेतन पूरा ले और काम करने से जी चुराए तो वह मजदूर के द्वारा मालिक अथवा उद्योग का शोषण है।

पूज्यवर ने आगे कहा--'परमपूज्य क्रान्तिकारी महामना आचार्य भिक्षु ने अपने ग्रंथ 'अनुकंपा की चौपई' में अनुकंपा के लौकिक और लोकोत्तर--दोनों प्रकारों का विशद विवेचन किया। जो दुःखी प्राणी हैं, उनके प्रति दया का भाव रहे, उन्हें चित्तसमाधि पहुंचाने की भावना रहे। जो व्यवहार अपने लिए मैं दूसरों से नहीं

चाहता, वह व्यवहार मैं दूसरों के साथ नहीं करूंगा--यह संकल्प भी करुणा की भावना है। हमारे द्वारा हो सके तो हम किसी के कल्याण का प्रयास करें, किन्तु किसी को दुःख न पहुंचाएं। निम्न जाति के लोगों के प्रति घृणा का भाव न हो। हम पवित्र एवं लोकोत्तर अनुकंपा का आसेवन करने वाले बनें। अनुकंपा का भाव कहीं-कहीं पशुओं में भी देखने को मिल सकता है तो मनुष्य तो एक चिंतनशील प्राणी है। जिसे भगवान बनने का अधिकार प्राप्त है, वह तो और अधिक दयावान बने और अपनी आत्मा के कल्याण का प्रयास करे।'

पूज्यप्रवर ने ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनलाल चोपड़ा (कानाना-अहमदाबाद) की ज्ञानशाला के संदर्भ में लंबे काल से दी जा रही सेवाओं तथा श्री सुरेशजी कोठारी (कानाना-गदग) का उल्लेख किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री सुरेश कोठारी ने किया।

आज सायंकाल बाड़मेर जिला कलेक्टर डा.वीणा प्रधान तथा एस.डी.एम.श्री कमलेश आबूसरिया ने पूज्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। कानाना में ८० तेरापंथी परिवार हैं। आज रात्रि में उन्हें पूज्यवर की उपासना का अवसर संप्राप्त हुआ। इस दौरान श्रद्धालुओं ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

n"ifj.kkek dk tkudj u'k l cp

„† ebA कानाना प्रवास का दूसरा दिन। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः वृद्ध, रुग्ण और अक्षम व्यक्तियों को दर्शन देने हेतु पधारने के क्रम में स्थानीय तेरापंथ भवन में पधारे और भवन के दोनों तलों का अवलोकन करने के उपरान्त कुछ क्षण विराज कर 'आपणे भागां री' गीत का आंशिक संगान किया।

आज का प्रातःकालीन कार्यक्रम नशामुक्ति सम्मेलन के रूप में समायोजित हुआ। कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष श्री घीसूलाल चोपड़ा तथा श्री केवलचन्द बाफणा ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

सम्मेलन में उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए परमपूज्य आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'धर्म का एक आयाम है--संयम। जिस व्यक्ति के जीवन में संयम की साधना पुष्ट होती है मानना चाहिए कि उसके जीवन में बहुत कुछ आ गया। अणुव्रत का महत्त्वपूर्ण उद्घोष है--'संयमः खलु जीवनम्।' एक सीमा के अतिरिक्त असंयम नहीं है तो वह स्वस्थ जीवन है। संयम हमारी आत्मा के लिए कल्याणकारी है। नशामुक्ति संयम का ही एक अंग है। नशा एक ऐसी बीमारी है, जिसने कितने-कितने लोगों पर आक्रमण किया है। गांवों, कस्बों, नगरों और महानगरों--सब जगह नशा देखने को मिल सकता है। मानों नशारूपी राक्षस ने अपना व्यापक रूप धारण कर रखा है। नशे से अनेक प्रकार की हानियां संभावित हैं। एक ओर जहां नशा आत्मा के लिए नुकसानदेह है, वहीं दूसरी ओर अनेक शारीरिक व्याधियां भी इससे हो सकती हैं। गरीबी को रहने और बढ़ने का मौका भी नशे के कारण मिल जाता है। लोग परिश्रमपूर्वक पैसा कमाते हैं, जिसमें से कुछ पैसा नशे की भेंट चढ़ा देते हैं। व्यक्ति थोड़े से लाभ के लिए अपना बड़ा नुकसान कर लेता है तो यह उसकी विचारमूढ़ता ही है। व्यक्ति नशे के दुष्परिणामों को जानकर उससे मुक्त होने का संकल्प स्वीकार करे।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के आह्वान पर प्रवचनोपरान्त अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। श्री जवाहर श्रीश्रीमाल एवं श्री जवाहर चोपड़ा ने सपत्नीक शीलव्रत ग्रहण किया। श्री भैरूंलाल डागा एवं श्री महेन्द्र कोठारी ने नशामुक्ति के संकल्पपत्र आचार्यवर को उपहृत किए।

gj ifjfLFkfr e jg eè;LFk Hkko

„‡ ebA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः कानाना से जेठन्तरी की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में पारलू गांव के बाहर सैकड़ों श्रद्धालुओं ने पूज्यवर की अभिवंदना की। आचार्यवर पारलू के स्थानीय उच्च प्राथमिक बालिका विद्यालय में कुछ क्षण विराजमान भी हुए। मनरेगा योजना के अंतर्गत बड़ी संख्या में कार्यरत महिलाओं

ने मार्ग में पूज्यवर के दर्शन किए और जीवनोपयोगी प्रेरणा प्राप्त की। लगभग नौ किमी. का विहार कर आचार्यवर जेठन्तरी पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री प्रमोदकुमार चोपड़ा, सुश्री देवकन्या भंसाली, श्री पारसमल भंडारी, श्रीमती कान्ता चोपड़ा एवं श्रीमती सरोज चोपड़ा ने पूज्यवर के स्वागत में अपने भावसुमन अर्पित किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में वर्णित सोलह भावनाओं में अन्तिम है--मध्यस्थ भावना। जीवन में अनेक प्रकार की परिस्थितियां आ सकती हैं। साधक उन परिस्थितियों में मध्यस्थ भावधारा में रहने का प्रयास करे। यदि कोई हमारा विरोध करे तो भी हमारे मन में मध्यस्थ भाव रहे। विरोध करने वाले के प्रति आक्रोश का भाव न आए। उसके प्रति भी मंगल मैत्री का भाव रखें। एक व्यक्ति गुस्सा करे और सामने वाला प्रतिकार न करे तो पहले व्यक्ति का गुस्सा स्वतः शान्त हो सकता है। यह मानकर चलें कि स्वयं में यदि मैत्री, करुणा, प्रेम भावना है तो सामने वाला व्यक्ति भी वैसी भावधारा वाला बन सकता है। व्यक्ति यदि मध्यस्थ भावना का विकास करे तो वह आध्यात्मिक दृष्टि से तो आगे बढ़ता ही है, व्यावहारिक दृष्टि से भी वह अच्छा बन सकता है।'

आचार्यवर के पदार्पण से जेठन्तरी के दसों स्थानकवासी परिवारों के घर खुल गए। रात्रि में पूज्यवर ने उन परिवारों को उपासना का अवसर प्रदान किया।

समदड़ी में भव्य स्वागत

२६ मई परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः जेठन्तरी से समदड़ी के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में जेठन्तरी के माली समाज के लोगों ने आचार्यवर के दर्शन किए। उनसे संक्षिप्त वार्तालाप करते हुए आचार्यवर ने उन्हें पावन पाथेय प्रदान किया। मार्गवर्ती सांथुखेड़ा में अनेक लोग नशामुक्त बने। समदड़ी से लगभग दो किमी. पूर्व स्थित खेतारामजी महाराज के मंदिर परिसर में आचार्यवर कुछ क्षण आसीन हुए और राजपुरोहित समाज के लोगों को पावन संबोध प्रदान किया।

लगभग दस किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर छहदिवसीय प्रवास हेतु समदड़ी पधारे। पूज्यप्रवर के पदार्पण से यहां के श्रद्धालुओं में हर्ष का पारावार लहरा रहा था। चारों ओर अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। न केवल तेरापंथ समाज अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर समाज भी प्रफुल्लित और प्रमुदित था। यहां के सरपंच श्री बाबूलाल परिहार ने हजारों ग्रामवासियों के साथ पूज्यचरण का भावभीना स्वागत किया। भव्य स्वागत जुलूस के साथ आचार्यप्रवर नवनिर्मित तेरापंथ भवन में पधारे। श्री अरुणकुमार वीरचन्द अब्बाणी परिवार द्वारा आचार्यवर से मंगलपाठ सुनकर इस भवन का लोकार्पण किया गया। पूज्यप्रवर का छहदिवसीय प्रवास इसी भवन में हुआ।

अजित रोड पर स्थित डूंगरराम माली की जमीन पर निर्मित पण्डाल में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री मांगीलाल जीरावला एवं आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश जीरावला ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए।

समदड़ी की समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी आगमप्रज्ञाजी, समणी रश्मिप्रज्ञाजी, समणी अचलप्रज्ञाजी और समणी रोहिणीप्रज्ञाजी ने अपने गांव में अपने आराध्य की अभयर्थना में अपने भावों को प्रस्तुति दी। समणी गौतमप्रज्ञाजी ने अपनी पैतृक भूमि में अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए यहां की साध्वी गवेषणाश्रीजी की भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। समणी अमलप्रज्ञाजी ने विदेश में प्रवासित समदड़ी की समणी भावितप्रज्ञाजी के भावों को श्रीचरणों में प्रस्तुत किया। समणीवृन्द ने समूहगीत का संगान किया। दीक्षार्थिनी मुमुक्षु हेमलता ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। बहन प्रवीणा ने भी अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। मुनि मदनकुमारजी

ने अपनी जन्मभूमि में पूज्यवर का अभिनंदन किया। पूज्यवर के स्वागत में समदड़ीवासियों की ओर से संकल्पपत्रों का त्यागमय उपहार अर्पित किया गया।

श्री हीरालाल छाजेड़, श्री पुखराज जीरावला, श्री हनुमान जीरावला, श्री सोहन जीरावला (गुंटकल) एवं श्री मोहन जीरावला ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने श्रुतपंचमी (ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी) के अवसर पर उपस्थित जनमेदिनी को श्रुताराधना की प्रेरणा प्रदान की तथा अखिल भारतीय महिला मंडल द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान पाठ्यक्रम, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा संचालित ज्ञानशाला, जैन विश्वभारती के समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित जैन विद्या पाठ्यक्रम तथा जैविभा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित जैनदर्शन एवं संस्कृत, प्राकृत से संबद्ध पाठ्यक्रमों को श्लाघनीय बताया।

पूज्यवर ने समदड़ी के मुनि मदनकुमारजी के तत्त्वज्ञान और विनय भाव का उल्लेख किया तथा यहां की साध्वी गवेषणाश्रीजी, साध्वी कर्णिकाश्रीजी, साध्वी राजश्रीजी, साध्वी मैत्रीप्रभाजी, साध्वी मेरुप्रभाजी और साध्वी सम्यक्त्वयशाजी का नामोल्लेख करते हुए उनकी अनुपस्थिति में उन्हें परोक्ष रूप में साधना का विकास करने और अच्छा कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। अपने गांव में उपस्थित समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी अचलप्रज्ञाजी, समणी रश्मिप्रज्ञाजी, समणी आगमप्रज्ञाजी, समणी रोहितप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी तथा समदड़ी से ही संबद्ध समणी अमलप्रज्ञाजी का उल्लेख करते हुए उन्हें आध्यात्मिक विकास और पवित्र कार्य करते रहने हेतु उत्प्रेरित किया। विदेश में प्रवासित समदड़ी की समणी परिमलप्रज्ञाजी, समणी भावितप्रज्ञाजी और समणी विपुलप्रज्ञाजी का नामोल्लेख करते हुए आचार्यवर ने समणीवृन्द के समर्पणभाव तथा आध्यात्मिक उत्साह की श्लाघा की। बड़ी संख्या में यहां अब तक हुई दीक्षाओं के संदर्भ में छोटे गांव समदड़ी को साधुवाद देते हुए आचार्यवर ने स्वर्गीय श्रावक राणमलजी जीरावला द्वारा पारमार्थिक शिक्षण संस्था को दी गई निष्ठापूर्ण सेवाओं तथा स्वर्गीय श्रावक हीरालाल जीरावला आदि श्रावकों का भी उल्लेख किया।

कार्यक्रम में विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री दिनेशचन्द्रजी, स्थानीय विधायक श्री कानसिंहजी कोटड़ी, सरपंच श्री बाबूलाल परिहार आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम के उपरान्त श्री दिनेशचन्द्रजी सहित विश्व हिन्दू परिषद के अनेक कार्यकर्ता पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुए और विविध विषयों पर पथदर्शन प्राप्त किया।

ifo=k jg vFkktu dk lkr

„‰ ebA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जीवन एक यात्रा है और लंबी यात्रा है। इस यात्रा में हम अपनी मंजिल को न भूलें। लम्बी यात्रा में अनुकूलता और प्रतिकूलता का दौर आना संभव है। जिसके जीवन में समत्व है, वह हर स्थिति में सम रह सकता है। जिसके समत्व सध जाता है, वह अध्यात्म में सफल हो जाता है। वस्तुतः जीवन में संतुलन बहुत जरूरी है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अर्थ, काम एवं धर्म--यह भारतीय वाङ्मय की त्रिपदी है। अर्थ और काम--ये गृहस्थ जीवन के दो पहिये हैं। इन पर धर्म का अंकुश रहे। गार्हस्थ्य जीवन के लिए अर्थ की स्पष्ट आवश्यकता है। साधु त्यागी होते हैं, पर सब साधु कहलाने वाले व्यक्ति अर्थ त्यागी नहीं होते। साधु के पास पैसा नहीं है, बैंक बैलेंस नहीं है, कोई प्लॉट नहीं है, वे तो सर्वथा अकिंचन होते हैं। उनके पास मात्र धर्मोपकरण होते हैं। साधु भिक्षाजीवी होते हैं। वे सहज उपलब्ध भिक्षा से तृप्त रहते हैं। उपलब्ध मकान में रह जाते हैं, अन्यथा श्मशान या वृक्ष के नीचे भी आश्रय ले लेते हैं। साधु को तीन लोक का मालिक इसीलिए कहा जाता है, क्योंकि वे अर्थमुक्त हैं, अकिंचन हैं। अर्थ कभी त्राण नहीं दे सकता, पर सहयोग उससे जरूर मिलता है। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से नैतिकता, संयम और विसर्जन की बात कही। जीवन में प्रामाणिकता आ जाती है तो मानना चाहिए कि जीवन में धर्म का अंकुश है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आचार्य महाप्रज्ञ ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की बात कही। अर्थशास्त्र बड़े काम का है, लेकिन शर्त यह कि उसके साथ धर्म की समन्विति हो। अर्थोपार्जन के स्रोत की पवित्रता बनी रहे। इस संदर्भ में सजगता आवश्यक है। कहीं-कहीं कार्यक्रम व अन्य उपक्रमों के प्रायोजक बनते हैं, बैनर, किट आदि पर प्रायोजक के नाम प्रस्तुत किए जाते हैं। नाम की इतनी भावना क्यों? नाम की भावना को छोड़ना भी विसर्जन है। इसलिए नाम की भावना से ऊपर उठें। अर्थार्जन में संयम एवं प्रामाणिकता रहे तो गृहस्थ के लिए अर्थ मूल्यवान बन सकता है।'

कार्यक्रम का प्रारंभ मुनि राजकुमारजी के गीत से हुआ। स्थानकवासी समाज के मंत्री श्री प्रकाश मेहता, स्थानीय विधायक श्री कानसिंह कोटड़ी ने अपने प्रासंगिक विचार रखे। रामामंडी के श्री गिरधारीलाल जैन ने आचार्यवर की घोषित पंजाब यात्रा के बीच रामामंडी पदार्पण की प्रार्थना की। डोंबीवली ज्ञानशाला में इक्कीस वर्षों तक प्राध्यापक रहे श्री धर्मचन्द बडाला ने उपासक श्री सोहन कोठारी व महावीर बड़ाला के साथ अपनी पुस्तक 'जीवन पथ की सार्थकता' आचार्यवर को भेंट की। पूज्य आचार्यवर ने पुस्तक के संदर्भ में कहा--'इससे लोगों को प्रेरणा मिले, यह शुभाशंसा है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। आज रात्रि में समदड़ी के श्रद्धालु परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान लोगों ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

dVVjrk e tUek vknk; Hkko % x# pj.kk e igpk ,frgkfld l?k

वाव-थराद क्षेत्र के निवासी व सूरत प्रवासी पांच सौ वोरा परिवार के भाई-बहन तेईस बसों में लगभग एक हजार की संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ समदड़ी पहुंचे। भगवान शांतिनाथ की अधिष्ठात्री निर्वाणी देवी (अपर नाम झमकार देवी) के मंदिर की चौंतीसवीं वर्षगांठ पर यह संघ थराद पहुंचा था। इस संघ में नब्बे प्रतिशत लोग मूर्तिपूजक आम्नाय के व दस प्रतिशत तेरापंथी थे। वाव-थराद क्षेत्र में लंबे समय से मूर्तिपूजक बनाम अमूर्तिपूजक धर्म मान्यता एक सामाजिक दुराव का हेतु बनी हुई थी। ऐसी स्थिति में बहुसंख्यक मूर्तिपूजक समाज द्वारा किसी भी तरह का विरोध होना कोई अस्वाभाविक बात नहीं। समय बदला, परिस्थितियां बदलीं और शनैः शनैः कट्टरता समन्वय और सौहार्द में परिणत होती गई, पर यह क्षेत्र इससे काफी हद तक अछूता रहा। ऐसी स्थिति में मूर्तिपूजक समाज द्वारा तेरापंथ के आचार्य के दर्शन, सेवा का निर्णय लेना, उनकी देशना-श्रवण के लिए समुत्सुक होना किसी चमत्कार से कम नहीं है। आचार्य पदाभिषेक के बाद आचार्यवर की जो यात्रा हुई, कार्यक्रम हुए, उसमें तेरापंथी, स्थानकवासी या मूर्तिपूजक को खोज पाना मुश्किल हो गया। ऐसे क्षेत्र भी कम नहीं थे, जहां एक भी तेरापंथी परिवार नहीं था, लेकिन वहां के स्थानकवासी व मूर्तिपूजक समाज ने जिस ढंग से लाभ लिया, व्यवस्था की कमान संभाली, वह ऐतिहासिक दस्तावेज का अंग बन रहा है। इन सब बातों का प्रभाव भी पड़ा है। आचार्य महाश्रमण की सहजता, सरलता व पुण्यवत्ता का कोई ऐसा प्रभाववलय निर्मित हुआ है। निश्चित रूप से इस प्रसंग को तेरापंथ इतिहास का एक उल्लेखनीय प्रसंग कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मध्याह्न में पंडाल में आयोजित कार्यक्रम में दस वर्षीय बालिका क्रिया वोरा ने मधुर गीत प्रस्तुत किया। पांच सौ वोरा परिवार के प्रमुख श्री नवीनभाई पारीख ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए समाज की ओर से अभिनंदन पत्र समर्पित किया। विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित वाव पथक तेरापंथ समाज के श्री चंपकभाई मेहता, श्री प्रवीण मेहता व श्री बाघजीभाई के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। मुनि अभिजितकुमारजी एवं समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने अपने विचार प्रकट किए। आभारज्ञापन श्री नरेशभाई परीख व कार्यक्रम का संचालन श्री मुक्तिभाई परीख ने किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपनी अमृतमयी देशना में कहा--'मानव जीवन दुर्लभ है। यह वह योनि है, जहां से आत्मा परमात्मा बन सकती है। साधनामय जीवन जीने से ही परमात्मा बनने का रास्ता प्रशस्त

होता है। तीर्थंकरों, गुरुओं के प्रति भक्तिभाव रखना भी एक साधना है। इसके साथ ईमानदारी, अहिंसा का परिपालन भी आवश्यक है। व्यक्ति अधिक से अधिक हिंसा से उपरत बनें, रात्रि भोजन का यथासंभव परित्याग करें, जमीकन्द का परिहार हो, संयम का अभ्यास पुष्ट हो तथा धर्म-ध्यान के लिए समय का समुचित नियोजन करें।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'पांच सौ वोहरा परिवार के लगभग हजार लोगों का समूह इस भीषण गर्मी के मौसम में आया है। आप सब यहां आए, यह समन्वय की बात है। इतनी बड़ी संख्या में मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के लोगों का यहां आना महत्त्वपूर्ण है। सन् २०१३ में हमारा वाव आना घोषित है। सभी साधना के पथ पर आगे बढ़ते रहें।'

पांच सौ वोहरा परिवार द्वारा समर्पित अभिनंदन पत्र की भाषा इस प्रकार है--

'kklu iHkkod vkpk;Jh egkJe.kth!

जिनेश्वर प्रभु श्री शान्तिनाथजीनी अधिष्ठात्री देवी निर्वाणीदेवीनुं स्मरण वर्तमानमां 'झमकारदेवी ना रूपांमा श्रद्धालु परिवार करे छे। तेवा पांच सो वोरा परिवार शान्तिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजीना एक हजार यात्रिको साथे संघरूपमां दर्शन करी कृतकृत्यता अनुभवे छे। ''मत्थएण वंदामि''

verdk vè;kRe le#!

अमृत महोत्सवना उपलक्षमां आपश्री दीर्घायु समय सुधी जैन शासन प्रभावनानी अमृतवृष्टि करता रहो। आपनी निर्मल सोच, आध्यात्मिक चिंतन अने अप्रमत्त साधना अमारूं पथदर्शन करती रहे, एज मंगलकामना।

vè;kRe ;k=kh!

नजदीकना भविष्यमां गुर्जर धरा पर श्रीसंघ साथे आपनुं पधारपन अमारी जन्मभूमि माटे श्रेयस्कर बनी रहे छे। आपना शुभागमनथी बाव-थराद अने निकटवर्ती क्षेत्रों पावन थसे अमारा बधा क्षेत्रोनी स्पर्शना माटे विनम्र अनुरोध।

vudikuh prukuk lokgd!

जैन संघमां परस्पर प्रेम, सद्भाव, मैत्री, एकता, करुणा, निरन्तर बधती रहे। सर्व साधर्मिकोमां सद्भावना बनी रहे एवं आशीर्वादनी मंगल अमृत वर्षा आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा अमारा पर बरसती रहे, एज अभ्यर्थना।

पांच सो वोरा परिवार यात्रा संघ, सूरत वोरा-पारीख-संघवी-दोशी, मेहता-शेठ शांतिगोत्र

J)kour

प्रमुख : नवीनभाई वी.परीख

समदड़ी (राज.) २७ मई २०१२

dke ij vd'k jg èke dk

„Š ebA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'ज्ञान के साथ खोज में भी लगें, अपनी अनुभूति में लगें। जब तक स्व की अनुभूति नहीं होगी, तब तक परम की अनुभूति कैसे संभव हो सकेगी? आत्मानुभूति का पथ तभी प्रशस्त हो सकेगा, जब बाह्य अनुभूति से स्वयं को विलग करेंगे। इन्द्रियों का आलंबन लेकर चलने वाला सत्यांश को ही पकड़ पाएगा। इन्द्रियातीत की स्थिति में सत्य की परिपूर्णता का अनुभव हो सकता है, परम की प्राप्ति हो सकती है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'त्रिवर्ग के तीन आयामों में एक आयाम है--काम। साधु के लिए ब्रह्मचर्य का पूर्णतः परिपालन अनिवार्य होता है। गृहस्थ के लिए एक सीमा तक काम पर नियंत्रण रहे। काम हमारी वृत्ति है। इसे संयमित रखना हमारे हित में है। समाज में प्रचलित विवाह प्रथा के अन्तर्गर्भित तीन उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए आचार्यवर ने कहा--'विवाह के माध्यम से जीवन-साथी को चुना जाता है, जो सुख-दुःख की स्थिति में सदैव साथ दे सके। विवाह का एक उद्देश्य संतानोत्पत्ति

हो सकता है। सृष्टि को चलाने हेतु विवाह की परंपरा है। कामेच्छा की तृप्ति सभ्य तरीके से हो सके, इस पर विवाह प्रथा टिकी हुई है। इस काम की वृत्ति पर धर्म का अंकुश रहना आवश्यक है। स्वदार स्वपति संतोष व्रत कामेच्छा पर नियंत्रण है, अंकुश है। अन्य के प्रति विकारोत्पत्ति न हो, यह बड़ा संयम है। सामाजिक एवं आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से स्वदार स्वपति संतोष व्रत बहुत महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी है। जहां इस व्रत का अतिक्रमण होता है, वहां बड़ी कठिनाई उपस्थित हो जाती है। विवाह के बाद यह नियम ग्रहण कर लिया जाए तो बहुत अच्छा है। वस्तुतः शील का अभ्यास बहुत बड़ी साधना है। शरीर से ब्रह्मचर्य की साधना महत्त्वपूर्ण है, पर मन से पालन करना उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। सद्गृहस्थ को परस्त्रीगमन का परित्याग करना चाहिए। यह सात दुर्व्यसनों में एक दुर्व्यसन है। युवावस्था में शील का पालन करना बड़ी साधना है। आचार्य भिक्षु ने गृहस्थावस्था में युवावस्था में पत्नी के साथ शीलव्रत स्वीकार किया था। ब्रह्मचर्य की साधना के लिए दृढ़ संकल्प बल जरूरी है।'

कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी का गीत व मुनि मदनकुमारजी का वक्तव्य हुआ। मूर्तिपूजक समाज की ओर से श्री नेमीचन्दजी भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए।

Ip"V jg ekuothou dh lkFkdrk d fy,

„‹ ebA आज प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर समदड़ी के नई वास स्थित श्री वर्धमान जैन श्रावक संघ स्वाध्याय भवन में पधारे। वहां श्रीसंघ की ओर से आपका स्वागत किया गया। वहां उपस्थित श्रावक वर्ग को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यवर ने धर्म की प्रेरणा दी और कहा--'समदड़ी प्रवास के दौरान अभी हम नई वास में आए हैं। लोगों की भावना थी कि हम यहां आएं। सभी के जीवन में आध्यात्मिकता बनी रहे। सभी कल्याण के पथ पर आगे बढ़ते रहें।' नई वास में स्थानकवासी परिवार २७५, मूर्तिपूजक २०० तथा तेरापंथी पांच परिवार रहते हैं। जूनीवास में तेरापंथ के लगभग ७२ परिवार हैं।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि मदनकुमारजी के वक्तव्य के बाद मंत्री मुनिश्री का अभिभाषण हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित वारिया मठ के मठाधीश संत श्री नारायण भारती ने कहा--'आचार्यश्री की महिमा अपार है। आपका गुणगान सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों को मैंने पढ़ा है। वस्तुतः उनके विचार विश्व हित में हैं। आचार्य महाश्रमण के इस क्षेत्र में प्रवास से लोगों को प्रेरणा मिल रही है। आप स्वस्थ रहकर जनता की आध्यात्मिक सेवा करते रहें। आपके प्रवास से इस जिले में शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र की कमी दूर हो सकेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।'

'अणुव्रत महासमिति : एक परिचय' नामक आकर्षक बुकलेट महासमिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा, अणुविभा के अध्यक्ष श्री तेजकरण सुराणा व श्री ओम बांठिया ने गुरुचरणों में भेंट की। ज्ञानशाला के बच्चों ने रोचक परिसंवाद प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'आर्हत वाङ्मय में वर्णित चार दुर्लभ बातों में एक मनुष्य जन्म भी दुर्लभ है। धर्मशास्त्रों में वर्णित चौरासी लाख जीव योनियों में मानव जीवन की उपलब्धि को महत्त्वपूर्ण माना गया है। इस दुर्लभ मानव जीवन को पाकर क्या करना चाहिए, इस पर सब को विचार करना चाहिए। इस जीवन में अनगारत्व व मोक्ष की साधना संभव है। जो इस मानव शरीर को पाकर पवित्रता का जीवन नहीं जीता, उसे नादान और अभागा ही कहा जा सकता है। इस जीवन को पापार्जन में न गंवाएं। मानव जीवन की सफलता और सार्थकता के लिए सदैव सचेष्ट रहें। सच्चे व परोपकारी संत अपनी साधना के साथ जन कल्याण में भी संलग्न रहते हैं। सभी मानव जीवन का मूल्यांकन करें और जीवन में त्याग, संयम के आसेवन का प्रयास करें।'

संत नारायण भारतीजी के आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज संत संतों के पाहुने बने हैं। जहां संत रहते हैं, वहां की धरती महत्त्वपूर्ण बन जाती है।'

Lefr&Icy

- लाडनूं निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती कमलादेवी बोकड़िया (धर्मपत्नी-स्व.रेवंतमलजी बोकड़िया) का संथारे के चौबीसवें दिन स्वर्गवास हो गया। संथारे से पूर्व बारह दिन तक वे अस्पताल के सघन चिकित्सा कक्ष में एडमिट रहीं। उसके बाद श्राविकाजी ने स्पष्ट कह दिया कि अब घर ले चलो, मुझे संथारा करना है। बड़े दृढ़ मनोबल के साथ उन्होंने संथारा स्वीकार किया। उनके उच्च परिणामों में बहुश्रुत परिषद की सदस्य साध्वी कनकश्रीजी की सन्निधि सहायक बनी। इस संथारे से कोलकाता जैसे महानगर में धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। पूज्य गुरुदेव तुलसी के संसारपक्षीय ज्येष्ठ भ्राता मोहनलालजी खटेड़ की वे सुपौत्री एवं स्व.मुनि हंसराजजी की संसारपक्षीय भतीजी थीं। संथारे के दौरान उन्हें पूज्य आचार्यप्रवर एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के सन्देश प्राप्त हुए।
- चाड़वास निवासी बेंगलुरु प्रवासी मयंक चोरड़िया (सुपुत्र-श्री महावीर चोरड़िया) का उन्नीस वर्ष की अवस्था में सड़क दुर्घटना में देहावसान हो गया। मयंक धार्मिक अभिरुचि वाला युवक था।

IkfgR; dh InHk e uhfr fuèkkj.k

जैन विश्वभारती और आदर्श साहित्य संघ अधिकृत संघीय साहित्य प्रकाशक संस्थान हैं। दोनों प्रकाशक संस्थाएं विगत अनेक वर्षों से संघीय साहित्य के प्रकाशन संबंधी दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर रही हैं। दोनों संस्थाओं ने साहित्य प्रकाशन, विक्रय आदि के संदर्भ में नवीन नीति निर्धारित करते हुए श्रावक समाज से संघीय साहित्य के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बनने का आह्वान किया है। नव निर्धारित नीति इस प्रकार है--

१. संघीय साहित्य के प्रकाशन में किसी भी पुस्तक में आर्थिक सौजन्य के रूप में सहयोगी का नाम प्रकाशित नहीं किया जाए।
२. साहित्य के प्रकाशन की सुचारु व्यवस्था हेतु प्रकाशक संस्था के अन्तर्गत एक साहित्य कोष की अलग से स्थापना की जाए। साहित्य प्रकाशन हेतु जो भी व्यक्ति अनुदान देना चाहे, वह प्रकाशक संस्था को अपनी स्वेच्छानुसार दे सकता है। प्रकाशक संस्था द्वारा यह राशि उक्त साहित्य कोष में जमा की जाती रहे।
३. कोई भी व्यक्ति प्रकाशक संस्था को साहित्य प्रकाशन हेतु पांच लाख रुपये का अनुदान देकर **^IkfgR; Iik"kd*** और एक लाख रुपये का अनुदान देकर **^IkfgR; Ig;kxh*** बन सकता है।
४. प्रकाशक संस्था द्वारा पूज्यवर के सान्निध्य में राशि प्राप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के साहित्य संपोषक अथवा साहित्य सहयोगी के रूप में स्मृतिचिह्न प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा तथा विज्ञप्ति में उनका नामोल्लेख भी किया जा सकेगा।
५. प्रत्येक वित्तीय वर्ष की संपन्नता पर पुस्तकों के प्रकाशन से लाभ होने पर राशि साहित्य कोष में जमा हो जाएगी एवं हानि की स्थिति में राशि की पूर्ति साहित्य कोष द्वारा की जा सकेगी।
६. पुस्तकों का मूल्य लागत राशि से लगभग दुगुने से अधिक न रखा जाए।
७. प्रकाशक संस्था द्वारा संपूर्ण संघीय साहित्य प्रकाशित मूल्य से ५० प्रतिशत छूट पर उपलब्ध कराया जाए।
८. अन्य प्रकाशकों से प्रकाशित साहित्य पर छूट कम या ज्यादा परिस्थिति के अनुसार की जा सकती है।

इस संदर्भ में अधिक जानकारी तथा साहित्य संपोषक एवं साहित्य सहयोगी बनने हेतु जैन विश्वभारती से मोबाइल नं.०८२६०६२६७६७ व आदर्श साहित्य संघ से मोबाइल नं.६३११२३४६४१ पर संपर्क किया जा सकता है।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

५१००/- श्री भंवरलालजी बैद (राजलदेसर-टाटानगर-कोलकाता-दिल्ली) एवं श्रीमती विमलादेवी बैद के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में उनकी माताजी श्रीमती झमकूदेवी बैद, सुपुत्र व पुत्रवधू राकेश-राजू, राजेश-सरिता, ललित-सुमन, अरविन्द-अनु, सुपौत्र कर्ण, ऋषभ, यश, युवराज, वैभव, सुपौत्री सृष्टि, श्रेया, प्रज्ञा, रक्षा, जागृति बैद द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. बसंत खटेड़ (लाडनूं-कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनके पिता श्री कन्हैयालालजी खटेड़ एवं माता श्रीमती सूरजदेवी खटेड़ द्वारा प्रदत्त।

२५००/- श्री सम्पतमल-लक्ष्मीदेवी दूगड़ (सरदारशहर-दिल्ली-जोरहाट) के दाम्पत्य जीवन की ५१वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू सुरेन्द्र-आशा, नवीन-संगीता, सुपौत्र अक्षय, कर्ण, सुपौत्री वर्षा, नेहा, रिया दूगड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- कु. प्रणीता (सुपौत्री-श्री बाघजीभाई चंदूलाल मेहता, सुपुत्री-प्रकाशभाई बाघजीभाई मेहता, बाव-नवसारी) के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में उनकी दादीजी श्रीमती सीतावेन, श्रीमती कमलावेन, माताजी श्रीमती नयनादेवी एवं भाई प्रियंक मेहता द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. हरकलालजी दूगड़ (आमेट) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र मिश्रीलाल, मदनलाल, बंशीलाल, लक्ष्मीलाल, नवरतन दूगड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती पारसदेवी नाहटा (धर्मपत्नी-श्री टीकमचन्दजी नाहटा, छापर) के २५वें वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में भानुकुमार, प्रकाशकुमार, यश नाहटा, मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

lèkkj dj i<‰ अंक २ में उल्लेखनीय मार्ग सेवा' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित कांठा यात्रा में एक सप्ताह और उससे अधिक मार्ग सेवा करने वालों की सूची में श्री प्रेमराज बम्बोली(सियाट-लुधियाना) का नाम भी ज्ञातव्य है।

गत अंक में 'आयोजक ध्यान दें' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित निर्देश की अन्तिम पंक्ति इस प्रकार है--फिलहाल यह प्रयोग गुरुकुलवास में किया जा रहा है।

Kkr0;

मुनि शुभकरणजी (सरदारशहर) तेरापंथ धर्मसंघ से मुक्त हैं।

lenMh e nh{kk lekjkg

३१ मई को समदड़ी में आयोजित दीक्षा समारोह में परमपूज्य आचार्यवर ने मुमुक्षु हेमलता (समदड़ी) को साध्वी दीक्षा प्रदान की है। नवदीक्षित साध्वी का नाम साध्वी हेमप्रभा रखा है। विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

d'koi lkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&vkpk;Z egkJe.k iokl 0;oLFkk lfefr]
ik- tlky&…††,„† ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % ‹^Š,,‡‡…Šƒ] ‹…‡„†,†^†ƒ
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com
idk'ku fnukd % „&^&„,ƒ„

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **d'koi lkn pronhA**